



Study AV Kand 15 Hindi

अथर्ववेद 15.1.1 से 8

अथर्ववेद के 15वें काण्ड के देवता 'ब्राह्म' हैं। इस शब्द के कई अर्थ हैं – (क) किसी वर्ग, समाज या लोगों का संरक्षक अर्थात् परमात्मा, (ख) तपस्या करने वाला संकल्पवान व्यक्ति, अपने शब्दों और विचारों के प्रति समर्पित, (ग) परिव्राजक अर्थात् एक सन्त या फकीर की तरह सर्वत्र भ्रमण करने वाला और परमात्मा के प्रति उपदेश करने वाला, (घ) वर्ग या समाज।

परमात्मा के बारे में वैदिक ज्ञान की सर्वोच्चता और उद्देश्य के दृष्टिगत हम 'ब्राह्म' का प्राथमिक अर्थ किसी वर्ग, समाज या लोगों के संरक्षक के रूप में लेते हैं। कुछ मन्त्रों में अन्य अर्थ भी लागू किये जा सकते हैं। 'वृत्त' का अर्थ एक गोलाकार घेरा होता है या किसी भौतिक शरीर के द्वारा जो कुछ भी आवृत्त होता है। अतः 'ब्राह्म' का अर्थ है सबका स्वामी और संरक्षक जो कुछ भी भौतिक रूप से आवृत्त है, निर्मित वस्तुओं और जीवों का वर्ग।

'ब्राह्म' देवता का अर्थ 'अध्यात्मम्' भी होता है।

अथर्ववेद 15.1.1

ब्राह्म आसीदीयमान एव स प्रजापतिं समैरयत् ॥1॥

(ब्राह्मः) वर्ग, समाज और लोगों का संरक्षक अर्थात् परमात्मा (आसीत्) यहाँ था (ईयमानः) गतिमान (एव) केवल (सः) वह (प्रजापतिम्) लोगों का संरक्षण के लक्षण का (सम ऐरयत्) समुचित रूप से प्रेरित किया, निर्देश दिया।

व्याख्या :-

सृष्टि निर्माण की प्रेरणा किस प्रकार क्रियान्वयन में आई?

वहाँ केवल 'ब्राह्म' अर्थात् वर्ग, समाज और लोगों का संरक्षक अर्थात् परमात्मा पहले से ही गतिमान था। उसने समुचित रूप से अपने अन्दर लोगों का संरक्षण करने के लक्षण को प्रेरित किया, निर्देशित किया।

जीवन में सार्थकता :-

परिव्राजक सन्तों और फकीरों से क्या आशा होती है?

जिस प्रकार परमात्मा ने सृष्टि को क्रियान्वित करने के लिए अपनी 'प्रजापति' शक्ति को प्रेरित किया उसी प्रकार 'ब्राह्म' लोग अर्थात् परिव्राजक सन्त और फकीर आदि की तरह घूमते हुए और परमात्मा के बारे में उपदेश करते हुए अपने अन्दर 'प्रजापति' की शक्ति को सक्रिय कर लेते हैं। इस प्रकार ऐसे सन्त वास्तव में 'प्रजापति' ही बन जाते हैं और लोगों का ऐसे अनेक लोगों का ऐसे ध्यान रखते हैं जैसे एक पिता अपने पुत्रों का ध्यान रखता है।

सूक्ति 1 :- (ब्राह्मः आसीत् ईयमानः एव – अथर्ववेद 15.1.1) वहाँ केवल 'ब्राह्म' अर्थात् वर्ग, समाज और लोगों का संरक्षक अर्थात् परमात्मा पहले से ही गतिमान था।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(सः प्रजापतिम् सम ऐरयत् – अथर्ववेद 15.1.1) उसने समुचित रूप से अपने अन्दर लोगों का संरक्षण करने के लक्षण को प्रेरित किया, निर्देशित किया।

अथर्ववेद 15.1.2

स प्रजापतिः सुवर्णमात्मन्नपश्यत्तत्प्राजनयत् ।।2।।

(सः) वह (परमात्मा) (प्रजापतिः) लोगों का स्वामी और रक्षक (सुवर्णम्) स्वर्ण, महत्त्व में सबसे कीमती, उसकी प्रकृति रूपी शक्ति (आत्मन्) अपने स्वयं में (अपश्यत्) देखा (तत्) उसको (प्र अजनयत्) पूरी तरह से अभिव्यक्त करता है।

व्याख्या :-

इस सृष्टि में कौन अभिव्यक्त होता है?

वह (परमात्मा), लोगों का स्वामी और रक्षक, स्वयं अपने अन्दर स्वर्ण, महत्त्व में सबसे कीमती, उसकी प्रकृति रूपी शक्ति को देखता है और स्वयं को पूरी तरह उसमें (सृष्टि में) अभिव्यक्त कर देता है।

जीवन में सार्थकता :-

क्या इस प्रकृति और हमारे व्यक्तिगत जीवन का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व या शक्तियाँ हैं?

यह मन्त्र तथ्यात्मक सिद्धान्त का समर्थन करता है कि प्रकृति और हमारी व्यक्तिगत आत्मा की शक्तियों सहित सभी शक्तियाँ परमात्मा में निहित हैं। वास्तव में परमात्मा ने हर वस्तु में स्वयं को अभिव्यक्त किया है। प्रकृति माता भी परमात्मा की शक्तियों की अभिव्यक्ति है, कोई पृथक् या स्वतंत्र शक्ति नहीं है। इसी प्रकार हमारा व्यक्तिगत जीवन भी उसी पर निर्भर करता है। वास्तव में वह (परमात्मा) भिन्न-भिन्न जीवन रूपों में अभिव्यक्त है। मनुष्य का व्यक्तिगत अस्तित्व उसे अपनी मानसिक शक्तियों के द्वारा कार्य करने की स्वतंत्रता देता है, परन्तु वह स्वतन्त्रता भी कार्यों और उनके फल के प्रबन्धन अर्थात् कर्मफल सिद्धान्त के अन्तर्गत ही है जो परमात्मा की ही शक्ति है। मानव के अतिरिक्त अन्य जीव तथा समूची प्रकृति तो स्वतन्त्र रूप से कार्य करने की मानसिक शक्तियाँ भी नहीं रखते।

सूक्ति :- सारा मन्त्र।

अथर्ववेद 15.1.3

तदेकमभवत्तल्ललाममभवत्तन्महदभवत्तज्ज्येष्ठमभवत्तद्
ब्रह्माभवत्तत्तपोऽ भवत्तत्सत्यमभवत्तेन प्राजायत् ।।3।।

(तत्) वह (परमात्मा) (एकम्) केवल एक (अद्वितीय) (अभवत्) वहाँ था (तत्) वह (परमात्मा) (ललामम्) विशेष शक्तियों के साथ (अभवत्) वहाँ था (तत्) वह (परमात्मा) (महत्) महान् शक्ति (प्रकृति के निर्माण की) (अभवत्) वहाँ था (तत्) वह (परमात्मा) (ज्येष्ठम्) सर्वोच्च मुखिया (अभवत्) वहाँ था (तत्) वह



(परमात्मा) (ब्रह्म) विस्तृत और व्यापक (अभवत्) वहाँ था (तत्) वह (परमात्मा) (तपः) जोश, उत्साह (अभवत्) वहाँ था (तत्) वह (परमात्मा) (सत्यम्) सत्य (अभवत्) वहाँ था (तेन) इन सबके साथ (गुणों के साथ) (प्र अजायते) अभिव्यक्त करता है।

व्याख्या :-

किन गुणों के साथ परमात्मा सृष्टि में अभिव्यक्त होता है?

वह परमात्मा वहाँ केवल एक (अद्वितीय) था; वह परमात्मा विशेष शक्तियों के साथ था; वह परमात्मा महान् शक्ति (प्रकृति के निर्माण की शक्ति) के साथ था; वह परमात्मा सर्वोच्च मुखिया की तरह था; वह परमात्मा सर्वत्र फैला हुआ और व्यापक था; वह परमात्मा जोश, उत्साह के साथ था; वह परमात्मा सत्य की तरह था। उन सब (गुणों) के साथ उसने सृष्टि में स्वयं को अभिव्यक्त किया।

- सूक्ति 1 :- (तत् एकम् अभवत् – अथर्ववेद 15.1.3) वह परमात्मा वहाँ केवल एक (अद्वितीय) था;
 सूक्ति 2 :- (तत् ललामम् अभवत् – अथर्ववेद 15.1.3) वह परमात्मा विशेष शक्तियों के साथ था;
 सूक्ति 3 :- (तत् महत् अभवत् – अथर्ववेद 15.1.3) वह परमात्मा महान् शक्ति (प्रकृति के निर्माण की शक्ति) के साथ था;
 सूक्ति 4 :- (तत् ज्येष्ठम् अभवत् – अथर्ववेद 15.1.3) वह परमात्मा सर्वोच्च मुखिया की तरह था;
 सूक्ति 5 :- (तत् ब्रह्म अभवत् – अथर्ववेद 15.1.3) वह परमात्मा सर्वत्र फैला हुआ और व्यापक था;
 सूक्ति 6 :- (तत् तपः अभवत् – अथर्ववेद 15.1.3) वह परमात्मा जोश, उत्साह के साथ था;
 सूक्ति 7 :- (तत् सत्यम् अभवत् – अथर्ववेद 15.1.3) वह परमात्मा सत्य की तरह था।
 सूक्ति 8 :- (तेन प्र अजायत् – अथर्ववेद 15.1.3) उन सब (गुणों) के साथ उसने सृष्टि में स्वयं को अभिव्यक्त किया।

अथर्ववेद 15.1.4

सोऽवर्धत स महानभवत्स महादेवोऽभवत् ।।4।।

(सः) वह (परमात्मा) (अवर्धत) पृथ्वी को प्राप्त हुआ, विकास को प्राप्त हुआ, फैल गया (सः) वह (परमात्मा) (महान्) महान्, पूजनीय (अभवत्) वहाँ था (सः) वह (परमात्मा) (महादेव) सर्वोच्च दिव्य शक्ति (अभवत्) वहाँ था।

व्याख्या :-

परमात्मा की अभिव्यक्ति का विकास और विस्तार किस प्रकार हुआ?

वह (परमात्मा) वृद्धि को प्राप्त हुआ, विकसित हुआ और विस्तृत हुआ; वह (परमात्मा) महान् और पूजनीय वहाँ था; वह (परमात्मा) सर्वोच्च दिव्य शक्ति की तरह वहाँ था।

- सूक्ति 1 :- (सः अवर्धत – अथर्ववेद 15.1.4) वह (परमात्मा) वृद्धि को प्राप्त हुआ, विकसित हुआ और विस्तृत हुआ;
 सूक्ति 2 :- (सः महान् अभवत् – अथर्ववेद 15.1.4) वह (परमात्मा) महान् और पूजनीय वहाँ था;

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
 Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
 For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सूक्ति 3 :- (सः महादेव अभवत् – अथर्ववेद 15.1.4) वह (परमात्मा) सर्वोच्च दिव्य शक्ति की तरह वहाँ था।

अथर्ववेद 15.1.5

स देवानामीशां पर्येत्स ईशानोऽभवत् ।।5।।

(सः) वह (परमात्मा) (देवानाम्) समस्त दिव्य शक्तियों को (ईशाम्) शासन किया, व्याप्त किया (परि ऐत) चारों दिशाओं से, हर प्रकार से (सः) वह (परमात्मा) (ईशानः) शासक, व्याप्त (अभवत्) वहाँ था।

व्याख्या :-

समस्त दिव्य शक्तियों पर किसने शासन किया और व्याप्त किया?

उस (परमात्मा) ने समस्त दिव्य शक्तियों पर शासन किया, व्याप्त किया। वह (परमात्मा) व्याप्त होने के लिए शासक की तरह वहाँ था।

सूक्ति 1 :- (सः देवानाम् ईशाम् परि ऐत – अथर्ववेद 15.1.5) उस (परमात्मा) ने समस्त दिव्य शक्तियों पर शासन किया, व्याप्त किया।

सूक्ति 2 :- (सः ईशानः अभवत् – अथर्ववेद 15.1.5) वह (परमात्मा) व्याप्त होने के लिए शासक की तरह वहाँ था।

अथर्ववेद 15.1.6

स एकव्रात्योऽभवत्स धनुरादत्त तदेवेन्द्रधनुः ।।6।।

(सः) वह (परमात्मा) (एक व्रात्यः) वर्गों, समाज और लोगों का केवल एक संरक्षक अर्थात् परमात्मा (अभवत्) वहाँ था (सः) वह (परमात्मा) (धनुः) धनुष (जिससे विस्तार होता है) (आदत्त) धारण किया (तत्) वह (एव) केवल (इन्द्र धनुः) विस्तार की शक्ति, जीवों को जन्म देने की शक्ति।

व्याख्या :-

किसने सृष्टि का विस्तार किया?

वह (परमात्मा) वर्गों, समाज और लोगों का केवल एक संरक्षक था; उस (परमात्मा) ने धनुष धारण किया था (जिससे विस्तार होता है); वह धनुष ही उसके विस्तार की शक्ति था, जीवों को जन्म देने की शक्ति था।

जीवन में सार्थकता :-

विस्तार का धनुष कौन सा था?

परमात्मा की शक्तियों का धनुष 'प्राण' था जिसका प्रयोग करते हुए उसने जीवों को जन्म दिया। वह धनुष सभी कार्यों का फल देने का सिद्धान्त था जिसके माध्यम से सभी जीवों के जीवन और उनकी

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



गुणवत्ता स्वाभाविक रूप से निर्धारित होती है। वह धनुष 'ओ३म्' था, ऐसी तरंग जिसके द्वारा उसने समूची सृष्टि को तरंगित कर दिया।

सूक्ति 1 :- (सः एक व्रात्यः अभवत् — अथर्ववेद 15.1.6) वह (परमात्मा) वर्गों, समाज और लोगों का केवल एक संरक्षक था;

सूक्ति 2 :- (सः धनुः आदत — अथर्ववेद 15.1.6) उस (परमात्मा) ने धनुष धारण किया था (जिससे विस्तार होता है);

सूक्ति 3 :- (तत् एव इन्द्र धनुः — अथर्ववेद 15.1.6) वह धनुष ही उसके विस्तार की शक्ति था, जीवों को जन्म देने की शक्ति था।

अथर्ववेद 15.1.7

नीलमस्योदरं लोहितं पृष्ठम् ॥७॥

(नीलम) दृढ़, स्पष्ट ज्ञान (अस्य) उसका (परमात्मा का) (उदरम्) मध्य भाग, जैसे पेट (लोहितम्) उत्पन्न करने की क्षमता (पृष्ठम्) उसकी पीठ के समान अर्थात् उसके बल की मुख्य शक्ति।

व्याख्या :-

परमात्मा की मुख्य शक्तियाँ क्या हैं?

(क) दृढ़ और स्पष्ट ज्ञान, पेट के समान, परमात्मा का मध्य भाग है।

(ख) उत्पन्न करने की क्षमता उसकी पीठ के समान है अर्थात् उसके बल की मुख्य शक्ति।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा अपनी मुख्य शक्तियों का प्रयोग किस प्रकार करता है?

परमात्मा की दिव्य और अनन्य शक्ति इस सृष्टि को निर्बाध तरीके से पैदा करना और उसका पोषण करना है। उसकी शक्तियों के दो आयाम हैं :-

(क) उसका ज्ञान अर्थात् सर्वज्ञाता और (ख) उसकी जन्म देने की शक्ति अर्थात् सर्वशक्तिमान।

मानव सृष्टि का मध्य भाग ज्ञान है। सभी मनुष्य इस ज्ञान के माध्यम से ही परमात्मा से जुड़े रहते हैं। निःसंदेह कलियुग में अपार स्वार्थी हितों के कारण लोग दिव्य ज्ञान को टालने की प्रवृत्ति में रहते हैं, अतः परमात्मा के मध्य भाग से पृथक रहते हैं।

परमात्मा की दूसरी शक्ति जीवों को उनके कर्मों के अनुसार जन्म देने की शक्ति है जो कर्मफल सिद्धान्त के रूप में जानी जाती है। इस शक्ति के माध्यम से परमात्मा गलत कार्य करने वालों को दण्डित करते हैं और उन्हें उचित मार्ग के लिए प्रेरित करते हैं तथा श्रेष्ठ व्यक्तियों को पुरस्कार देते हुए उन्हें आत्मानुभूति की तरफ अग्रसर करते हैं।

इन शक्तियों के साथ वह सृष्टि का नियमित संचालन करते हैं।

ज्ञान रूपी प्रथम शक्ति सात्विक अर्थात् शुद्ध लोगों के लिए है।

कर्मफल नामक दूसरी शक्ति राजसिक अर्थात् सक्रिय और तामसिक अर्थात् अज्ञानी और राक्षसी लोगों के लिए है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सूक्ति 1 :- (नीलम् अस्य उदरम् – अथर्ववेद 15.1.7) दृढ़ और स्पष्ट ज्ञान, पेट के समान, परमात्मा का मध्य भाग है।

सूक्ति 2 :- (लोहितम् पृष्ठम् – अथर्ववेद 15.1.7) उत्पन्न करने की क्षमता उसकी पीठ के समान है अर्थात् उसके बल की मुख्य शक्ति।

अथर्ववेद 15.1.8

नीलेनैवाप्रियं भ्रातृव्यं प्रोर्णोति लोहितेन द्विषन्तं विध्यतीति ब्रह्मवादिनो वदन्ति ॥८॥

(नीलेन) निश्चित और स्पष्ट ज्ञान के साथ ही (ऐव) केवल (अप्रियम्) विरोधी अर्थात् आन्तरिक शत्रुताएं, बुराईयाँ आदि (भ्रातृव्यम्) भाई चारा (प्र उर्णोति) पूर्ण आवरण (लोहितेन) जन्म देने की शक्ति के साथ (द्विषन्तम्) द्वेषी, शत्रु (विध्यति) छेदित कर देता है (इति) इसको (ब्रह्मवादिनः) ब्रह्म के जानकार, परमात्मा के बारे में बोलने वाले (वदन्ति) बोलते हैं।

व्याख्या :-

परमात्मा दो प्रकार की, आन्तरिक और बाहरी, बुराईयों के साथ से कैसे निपटते हैं?

निश्चित और स्पष्ट ज्ञान के साथ ही, वह (परमात्मा) विरोधी भाईचारे अर्थात् आन्तरिक शत्रुताओं और बुराईयों आदि को पूरी तरह से आवृत कर देते हैं। जन्म देने की अपनी शक्ति के साथ, वह (परमात्मा) द्वेषी और शत्रुओं अर्थात् बाहरी शत्रुओं का छेदन कर देते हैं। ब्रह्म के बारे में जानने वाले और परमात्मा के बारे में बोलने वाले इसी प्रकार बोलते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

दो प्रकार की बुराईयाँ क्या हैं?

दो प्रकार की बुराईयाँ हैं :- (1) आन्तरिक और (2) बाहरी।

आन्तरिक बुराईयाँ और शत्रु हमारे पूर्व कार्यों और विचारों के साथ जुड़े हुए बुरे विचार और चित्त की वृत्तियाँ हैं। दिव्य ज्ञान तथा परमात्मा के प्रति श्रद्धा भक्ति के साथ इनका अन्त किया जा सकता है। बाहरी बुराईयाँ और शत्रु ऐसी समस्याएँ हैं जो हमे बाहर से प्राप्त होती हैं, हमारे परिवार से और हमारे समाज से। ऐसे शत्रुओं के हृदय और मन में ज्ञान को जन्म देकर या उनके लिए कल्याण कार्यों को करके हम ऐसे शत्रुओं से निपट सकते हैं।

सूक्ति 1 :- (नीलेन ऐव अप्रियम् भ्रातृव्यम् प्र उर्णोति – अथर्ववेद 15.1.8) निश्चित और स्पष्ट ज्ञान के साथ ही, वह (परमात्मा) विरोधी भाईचारे अर्थात् आन्तरिक शत्रुताओं और बुराईयों आदि को पूरी तरह से आवृत कर देते हैं।

सूक्ति 2 :- (लोहितेन द्विषन्तम् विध्यति – अथर्ववेद 15.1.8) जन्म देने की अपनी शक्ति के साथ, वह (परमात्मा) द्वेषी और शत्रुओं अर्थात् बाहरी शत्रुओं का छेदन कर देते हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



This file is incomplete/under construction

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171